जटायोः शौर्यम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» पाठ का कथा-अन्वय (जटायु का आगमन और युद्ध)

प्रश्न 1 (आसान). सीता के करुण-विलाप को सुनकर कौन वहाँ जाता है?
उत्तर – पक्षियों का राजा जटायु

प्रश्न 2 (आसान). जटायु पहले क्या करता है–युद्ध या प्रबोधन?
उत्तर – पहले प्रबोधन/समझाता है

प्रश्न 3 (मध्यम). कथा-अन्वय के अनुसार युद्ध शुरू क्यों होता है?
उत्तर – रावण जब जटायु की बात नहीं मानता और अपसारयति कर देता है, तभी युद्ध शुरू होता है।

प्रश्न 4 (कठिन). "तुण्डेन पादाभ्या... स्वनखैः..."–इस वाक्य से क्या संकेत मिलता है?
उत्तर – जटायु अलग-अलग हथियार/अंगों (चोंच, पाँव, नख) से बहु-प्रहार करके रावण को रोकने की तीव्र कोशिश कर रहा था।

» जटायु की चेतावनी–निन्दा, धैर्य और 'अपरिवर्तन' का कारण

प्रश्न 5 (आसान). "परदारभिमर्शनात् नीचां मतिं निवर्तय" में 'मतिं' किसको बदलने की बात है?
उत्तर – रावण की गलत/नीच सोच को

प्रश्न 6 (आसान). "धीरः तत् न समाचरेत्" का सीधा भाव क्या होगा?
उत्तर – धैर्य रखो, वो काम मत करो

प्रश्न 7 (मध्यम). "यत् अस्य परः विगर्हयेत्" का सही भावार्थ लिखो।
उत्तर – क्योंकि लोग उसकी निन्दा करेंगे

प्रश्न 8 (मध्यम). कहानी में 'अपरिवर्तन' से क्या समझते हैं?
उत्तर – चेतावनी देने पर भी रावण का मन न बदलना

प्रश्न 9 (कठिन). जटायु की चेतावनी का नैतिक कारण और परिणाम दोनों जोड़कर लिखो–1-2 संस्कृत पंक्तियों में।
उत्तर – कारण: नीच मतिं निवर्तयेत्, धीरः न समाचरेत्; परिणाम: परः विगर्हयेत्।

» संवाद/उक्ति का प्रकार: आत्मगतम्, प्रकाशम्, अतिरामता

प्रश्न 10 (आसान). जब अभिनेता मन में ही किसी बात को सोचता है, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – आत्मगतम्

प्रश्न 11 (आसान). दर्शकों के सामने संवाद प्रकट करना किस प्रकार की उक्ति है?
उत्तर – प्रकाशम्

प्रश्न 12 (मध्यम). "राम से आगे बढ़ जाने/लाँघ जाने" का भाव किस प्रकार कहा गया है?
उत्तर – अतिरामता

प्रश्न 13 (कठिन). यदि किसी उक्ति में कटाक्ष/उपहास इतना आगे निकल जाए कि साधारण सीमा लाँघती लगे, तो उसे किस प्रकार मानोगे?
उत्तर – अतिरामता

» विशेषण-संज्ञा संरचना: जटायु/रावण का लक्षणात्मक वर्णन

प्रश्न 14 (आसान). 'महाबलः' शब्द किसके लक्षण के रूप में आएगा–जटायुः या रावणः? (सही जोड़ चुनो)
उत्तर – रावणः के साथ जोड़ो (महाबलः रावणः)।

प्रश्न 15 (आसान). 'पक्षिश्रेष्ठः' किस संज्ञा का लक्षण होगा?
उत्तर – जटायुः का लक्षण (पक्षिश्रेष्ठः जटायुः)।

प्रश्न 16 (मध्यम). यदि वाक्य में 'जटायुः' के साथ 'वृ(ः' और 'पतगसत्तमः' दो विशेषण आए हों, तो दोनों को किस संज्ञा से जोड़ोगे?
उत्तर – दोनों विशेषण जटायुः से ही जोड़ोगे। (वृ(ः जटायुः; पतगसत्तमः जटायुः)

प्रश्न 17 (कठिन). दिए गए विकल्प: (1) जटायुः (2) रावणः (3) क्रोध्मूचर््छितः (4) हतसारथिः. 'क्रोध्मूचर््छितः' और 'हतसारथिः'–किस-किस संज्ञा से सही जोड़ होगा?
उत्तर – 'क्रोध्मूचर््छितः' रावणः का लक्षण होगा; 'हतसारथिः' (सारथि मारा हुआ) जटायुः/रावणः में जिस संदर्भ में आया हो–यहां मानक लक्षण के अनुसार रावणः से जोड़ते हैं: 'क्रोध्मूचर््छितः रावणः' और 'हतसारथिः रावणः'।

» रूपधातु/उपपद प्रयोग (णिनि-प्रत्यय): गुणिन्, कवचधरी आदि

प्रश्न 18 (आसान). 'गुणिन्' का अर्थ क्या होगा?
उत्तर – गुणों वाला–जिसके पास गुण हैं।

प्रश्न 19 (आसान). 'कवचधरी' में 'कवच' किस चीज़ को दिखा रहा है?
उत्तर – कवच (armor)।

प्रश्न 20 (मध्यम). 'दण्ड' से इसी नियम पर विशेषण पद लिखो।
उत्तर – दण्डधरी

प्रश्न 21 (कठिन). 'धनु' (धनुष) से बनने वाला वैसा ही विशेषण पद कौन-सा है?
उत्तर – धनुधर्र्

» विलोम/पर्याय मिलान और अर्थ-आधारित भाषा-प्रयोग

प्रश्न 22 (आसान). सत्यम् का विलोम कौन-सा होगा?
उत्तर – असत्यम्

प्रश्न 23 (आसान). प्रवृत्तः का विलोम कौन-सा होगा?
उत्तर – निवृत्तः

प्रश्न 24 (मध्यम). आर्य और गर्हितः में कौन-सा शब्द 'निंदनीय' के लिए आता है?
उत्तर – गर्हितः

प्रश्न 25 (कठिन). अगर किसी को 'पापकमणा राक्षसेन्द्रेण' की तरह गलत काम करने वाला कहा जाए, तो उसे सकारात्मक भाव में 'आर्य' कहेंगे या नकारात्मक में 'गर्हितः'?
उत्तर – नकारात्मक में 'गर्हितः'

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. कथा-अन्वय लिखिए: सीता के करुण-विलाप के बाद जटायु कहाँ जाता है, वह क्या करता है, और युद्ध क्यों शुरू होता है?

› पहले 'कौन' पहचानो: जटायु (पक्षिराजः)।
› 'कहाँ' पहचानो: सीता के करुण-विलाप वाला वन/उपवन (पश्यवटीकानने/वनस्पतिगतं क्षेत्र)।
› 'क्या' पहचानो: जटायु रावण को समझाकर गलत काम रोकने की कोशिश करता है।
› 'क्यों' जोड़ो: रावण नहीं रुकता/अपसारयति, इसलिए संघर्ष (युद्ध) होता है।
› युद्ध का प्रारंभिक रूप लिखो: चोंच, पाँव, नखों से प्रहार।

उत्तर – सीता के करुण-विलाप को सुनकर जटायु वहाँ उसी जंगल/वन-प्रदेश में जाता है। वह रावण को सीतापहरण से हटने के लिए प्रबोध्य (समझाकर) रोकने का प्रयास करता है। लेकिन रावण मन नहीं बदलता और जटायु को हटा देता है, इसलिए युद्ध शुरू होता है–जटायु चोंच, पाँव और नखों से प्रहार करता है।

उदाहरण 2. नीचे दिए गए वाक्य का भावार्थ लिखो: "धीरः तत् न समाचरेत् यत् अस्य परः विगर्हयेत्।"

› धीरः = धैर्य वाला, समझदार
› तत् न समाचरेत् = उस काम को मत करो
› यत् अस्य परः विगर्हयेत् = क्योंकि पराये/लोग उसकी निन्दा करेंगे

उत्तर – समझदार बनो, उस गलत काम को मत करो–क्योंकि आगे लोग उसकी निन्दा/विगर्हा करेंगे।

उदाहरण 3. निम्नलिखित उक्ति को प्रकार बताइए–"हे रावण! परदारभिमर्शनात् नीचां मतिं निवर्तय..." यह मंच पर किसी को आदेश देकर कहा गया है।

› देखो–उक्ति 'हे रावण' कहकर रावण को संबोधित कर रही है।
› ये दर्शकों के सामने संवाद जैसा है, किसी 'मन की बात' की तरह अंदरूनी नहीं।
› भाव में राम-सीमा लाँघने वाला अलग 'अतिरामता' संकेत नहीं दिख रहा; यह सीधा संबोधन है।

उत्तर – यह 'प्रकाशम्' है।

उदाहरण 4. दिए गए शब्दों से लक्षणात्मक वर्णन बनाओ: 'क्रोध्मूचर््छितः' और 'रावणः' का समुच्चित/उचित जोड़ करके एक वाक्य बनाओ।

› पहले संज्ञा पहचानो: 'रावणः' मुख्य नाम है।
› अब 'क्रोध्मूचर््छितः' को लक्षण/गुण मानो–यह रावण का व्यवहार/स्थिति बताता है।
› अतः 'क्रोध्मूचर््छितः' को 'रावणः' के साथ जोड़कर लक्षणात्मक संरचना बनाओ।

उत्तर – क्रोध्मूचर््छितः रावणः। (यानी क्रोध से/क्रोधवश युक्त रावणः)

उदाहरण 5. 'शर' (बाण) से 'शरधरी' जैसे विशेषण पद बनाओ, और अर्थ भी लिखो। फिर जटायुः के साथ सही विशेषण लिखने की तरह प्रयोग समझो।

› देखो, आधार शब्द कौन-सा है: 'शर' = बाण
› उदाहरण के अनुसार '-धरी' रचना आती है: जो चीज़ को धारण करे
› अतः पद बनेगा: 'शरधरी'
› अर्थ जोड़ो: 'शरधरी' = बाण धारण करने वाला

उत्तर – शरधरी = शर + धरी-रचना, अर्थ: बाण (शर) धारण करने वाला।

उदाहरण 6. शब्द "आर्य" का विलोम (विपरीत अर्थ वाला) शब्द चुनिए: "गर्हितः" या "पक्षिश्रेष्ठः"।

› पहले "आर्य" का अर्थ सोचो: सम्माननीय/अच्छा।
› अब विकल्प देखें: "गर्हितः" का अर्थ निंदनीय/गाली के लायक होता है–यह उल्टा है।
› "पक्षिश्रेष्ठः" पक्षियों में सबसे श्रेष्ठ है; यह सम्मान/निंदा के उलटे भाव से मेल नहीं खाता।
› इसलिए विलोम "गर्हितः" होगा।

उत्तर – "आर्य" का विलोम = गर्हितः

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- लिखते समय हर घटना के साथ 'क्यों' (कारण) की एक लाइन जरूर लिखो।
- 'विगर्हयेत्' का अर्थ हमेशा 'लोक-निन्दा' लिखो।
- अभ्यास में हर वाक्य के लिए संबोधन और 'भीतर/सामने' का संकेत चिह्नित करना याद रखें।
- लक्षणात्मक वर्णन में विशेषण-संज्ञा संबंध साफ लिखो–गलत जोड़ पर अंक कटते हैं।
- उत्तर लिखते समय '-न्' और '-धरी' की ending बिल्कुल उदाहरण जैसी रखें।
- विलोम/पर्याय प्रश्नों में पहले अर्थ लिखकर मिलान करो–शब्द देखकर मत उलझो।

एक नज़र में रिवीज़न

› विलाप आगमन प्रबोधन न मानना युद्ध

› - विगर्हयेत् = 'लोकनिन्दा' (लोग निन्दा करेंगे)

› - आत्मगतम्: मन, प्रकाशम्: सामने, अतिरामता: लाँघ/अति-भाव

› - पहले संज्ञा, फिर विशेषण जोड़ो।

› गुण + णिनि गुणिन्; वस्तु + धरी धारण करने वाला।

› - सत्यम्/असत्यम्, प्रवृत्त/निवृत्त, आर्य/गर्हित